Dr. Kumari Priyanka

History department

HD Jain college, ara

Notes for BA part 3, paper 5

Topic :–हुमायूँ का जीवन परिचय1530-56)

बाबर की मृत्यु के पश्चात् 30 दिसंबर, 1530 को हुमायूँ का आगरा में राज्याभिषेक हुआ। यद्यपि, अपनी मृत्यु के पूर्व ही बाबर ने हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत कर दिया था. तथापि बाबर की मृत्यु के चौथे दिन ही वह गद्दी पर बैठ सका। इस विलंब का कारण संभवतः बाबर के वजीर निजामुद्दीन अली मुहम्मद खलीफा का षड्यंत्र था। वह बाबर के बहनोई मेहदी ख्वाजा को गद्दी दिलवाना चाहता था; परंतु यह षड्यंत्र विफल हो गया और हुमायूँ आगम की गद्दी पर बैठा। हुमायूँ के जीवन एवं कार्यकलापों को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है : प्रारंभिक जीवन (1508-30), शेरशाह से संघर्ष (1530-40), निर्वासित जीवन (1540-55) एवं सत्ता की पुनर्स्थापना (1555-56) ।

हुमायूँ का आरंभिक जीवन (The Early Life of Humayun, 1508-30)- हुमायूँ का पूरा नाम नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ था। उसका जन्म 6 मार्च, 1508 को काबुल में हुआ था। उसकी माता माहिम बेगम थी। बाबर हुमायूँ से अगाध प्रेम करता था और उसे अपने पुत्रों में सबसे अधिक योग्य समझता था। गुलबदन बेगम की हुमायूँनामा में लिखा गया है कि बाबर ने अपने राज्य का निर्माण हुमायूँ के लिए ही किया। अपने प्रिय पुत्र की शिक्षा-दीक्षा का बाबर ने उचित प्रबंध किया। उसे अरबी, फारसी एवं तुर्की भाषा की शिक्षा के अतिरिक्त सैनिक शिक्षा भी दी गई। वह तीरंदाजी एवं घुड़सवारी में माहिर था। उसे युद्ध के मोर्चे तथा व्यूह-संरचना एवं इसे तोड़ने की भी शिक्षा दी गई।बाबर ने हुमायूँ को छोटी उम्र से ही राज-काज में प्रशिक्षित करना आरंभ किया एवं उसे महत्त्वपूर्ण दायित्व सौंपे। 12 वर्ष की छोटी उम्र में ही उसे बदख्शां के प्रशासन की देखभाल के लिए नियुक्त किया गया। बाबर ने जब 1526 ई० में भारत पर आक्रमण किया तब हुमायूँ भी बदख्शां से अपनी सेना लेकर बाबर के साथ आ मिला। पानीपत के युद्ध के पूर्व उसने हिसार-फिरोजा के निकट हामिद खाँ की सैनिक टुकड़ी को परास्त किया। हुमायूँ ने बाबर के साथ पानीपत एवं खनुआ के युद्धों में भी भाग लिया। उसने अफगानों से अनेकों बार संघर्ष किए तथा आगरा, संभल, जौनपुर, गाजीपुर एवं कालपी पर मुगल सत्ता स्थापित की।हुमायूँ के कार्यों से प्रसन्न होकर बाबर ने उसे आगरा की विजय के पश्चात पर्याप्त धन एवं संभवतः 'कोहिनूर' हीरा भी भेंट किया था। बाबर को सभ्भल की जागीर भी दी गई। खनुआ के युद्ध के पश्चात उसे बदख्शां भेज दिया गया परंतु उजबेगों का दमन करने में असफल होकर, बाबर के गिरते स्वास्थ्य की खबर पाकर वह 1528 ई० में आगरा वापस आ गया। आगरा से उसे पुनः संभल की देखभाल के लिए भेजा गया, जहाँ वह बीमार पड़ गया। अतः, हुमायूँ को आगरा बुलवा लिया गया। 1530 ई० की गर्मियों में वह पुनः बीमार पड़ा। कहा जाता है कि

हुमायूँ की बीमारी से दुखी बाबर ने ईश्वर से प्रार्थना की कि हुमायूँ को अच्छा कर बाबर के ही प्राण ईश्वर ले लें। इसके बाद हुमायूँ ठीक हो गया और बाबर बीमार पड़ गया। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पूर्व उसने हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया। बाबर की मृत्यु के बाद अली मुहम्मद खलीफा ने हुमायूँ के बदले मेहदी ख्वाजा को गद्दी सौंपने का षड्यंत्र किया, जो सफल नहीं हो सका। अतः, 30 दिसंबर, 1530 को हुमायूँ बादशाह बना।